Impact Factor - 3.452 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2018

SPECIAL ISSUE-XXXVII

Indian Literature and Society

भारतीय साहित्य और समाज

भारतीय साहित्य आणि समाज

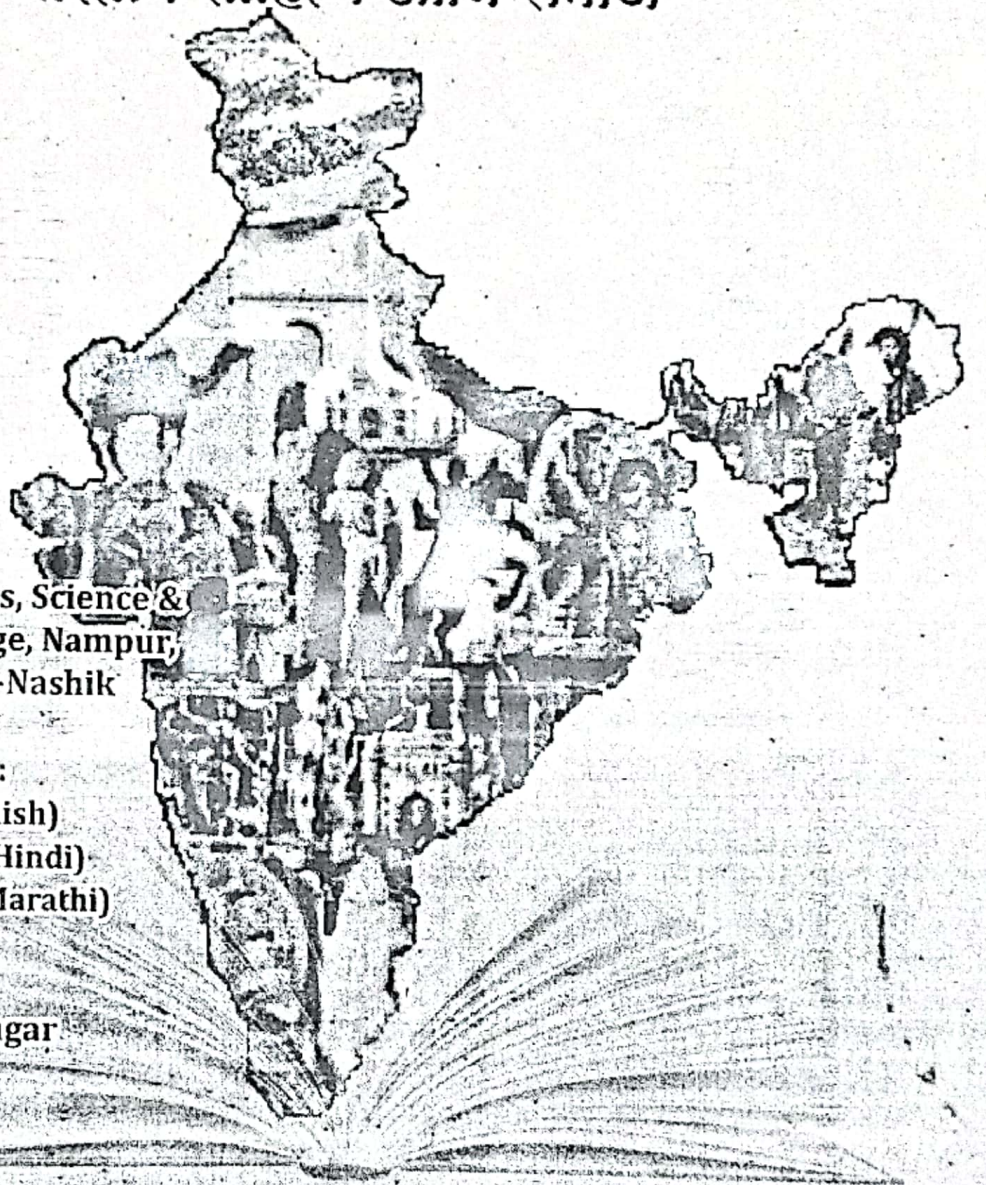

Guest Editor :
Dr. D. F. Shirude
Principal
M.G.V.'s S.P.H. Arts, Science &
Commerce College, Nampur,
Tal. Baglan, Dist.-Nashik

Executive Editor :
Prof.C. R. Patil (English)
Prof.R. P. Thakare (Hindi)
Prof.Sunil Jadhav (Marathi)

Chief Editor :
Dr. Dhanraj Dhangar

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal List No. 40705 & 44117
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

RESEARCH JOURNEY

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with OKEN Scanner

22	*Mulk Raj Anand: 'A Champion of the under-dog of Indian Society'* Mrs. Kavita Kakhandki & Prof. Milind Ahire	94
23	*The Stylistic Analysis of Chitra Banerjee Divakaruni's 'One Amazing Things'* Dr. K. S. Kokane	97
24	*The Portrait of Marginalized Class in Indian Literature* Dr. S. D. Sindkhedkar	100
25	*The Triple Marginalization of Women in Rama Mehta's 'Inside the Haveli'* Dr. R. V. Tribhuvan	106
26	*The Rising Fortunes of Rosie in R. K. Narayans's 'The Guide'* Dr. Smt. Premal Deore	110
27	*The Caste Conflict in Vasant Moon's 'Growing up Untouchable in India': A Dalit Autobiographical Narrative* S.P. Kamble & Dr.R.S.Chikhalikar	112
28	*Pragmatic Perspectives on the Novels of Khushwant Singh* Mr. C. R. Patil	118
29	Realism in Indian literature Mr. Salman Khan Pathan	123
30	*Contemporary Social Realities in the Plays of Mahesh Dattani* Mr. Anil Aher & Dr. Bharati Khairnar	125
	हिंदी विभाग	
31	विस्थापन की त्रासदी 'फेरा' के संदर्भ में — प्रा.झाकीर हुसेन मुलाणी	130
32	साहित्य और समाज — डॉ.अनिता नेरे	133
33	'साहित्य ओर संस्कृति का अंतःसंबंध' — डॉ.योगिता हिरे	137
34	हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन (मैत्रेयी पुष्पा के 'अल्मा कबूतरी' के विशेष संदर्भ में) — डॉ. वनिता पवार	140
35	राष्ट्रीय-चेतना के प्रखर प्रवक्ताः कवि दिनकर — डॉ.जे.एस्.मोरे	146
36	साहित्य ओर समाज का अंतःसंबंध ('ऑसू बने संगीत' उपन्यास के विशेष संदर्भ में) — प्रा.संतोष पगार, डॉ.अशोक धुलधुले	150
37	'छप्पर' उपन्यास में दलित चेतना — डॉ.जालिंदर इंगले	153
38	इक्कीसवीं सदी का साहित्य और स्त्री विमर्श — प्रा.अनंत नानाजी केदारे	157
39	साहित्य और संस्कृति — प्रा.के.के.बच्छाव	160
40	भारतीय साहित्य में लोककला — प्रा.डॉ.व्ही.डी.सूर्यवंशी	162
41	हिंदी साहित्य और आंचलिकता — प्रा. बापू शेळके	165
42	स्वदेश दीपक के नाटकों में संवैधानिक मूल्य — प्रा.बन्सीलाल गाडीलोहार, डॉ.पी.व्ही.कोमटे	168
43	कामायनी में भारतीय संस्कृति — प्रा.राजाराम शेवाळे	172
44	साहित्य और जीवन-दर्शन — प्रा.आर.एन.वाकले, डॉ.डी.बी.महाजन	178
45	नागार्जुन के उपन्यासोंमें चित्रित समस्याएँ (बाबा तथा बाबा बटेसरनाथ के संदर्भ में) — प्रा.जयमाला चंद्रात्रे	180
46	भारतीय साहित्य में पर्यावरण बोध (चंद्रकांत देवताले रचित 'पेड़' कविता के विशेष संदर्भ में) — प्रा.रवींद्र ठाकरे	184
47	कथाकार रुपसिंह चंदेल के उपन्यासों में चत्रित संस्कृति — प्रा.अनिता राजबंशी, डॉ.अनिता नेरे	187
48	साहित्य और समाजः समतुल्यता — प्रा.राहुल बहोत	192
49	साहित्य, समामज एवं संस्कृति का अन्तःसंबंध — प्रा.वैशाली दामले	195
50	साहित्य और ऑचलिकता — प्रा. वाय.एस.गातवे	199

Scanned with OKEN Scanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue 47 : Indian Literature & Society
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
February 2018

साहित्य और संस्कृति

प्रा के. के. बच्छाव
हिंदी विभाग अध्यक्ष
एस.पी.एच. महिला महाविद्यालय, मालेगाव कॅम्प
मो.नं. 9421607803, Email- bkk.sph@gmail.com

संस्कृति शब्द का संबंध संस्कार से है जिसका अर्थ है संशोधन करना, शुध्दिकरण, नवनिर्माण, पवित्र तथा सुंदरतम सृष्टि की प्रक्रीया । संस्कृति मानव जीवन का स्पंदन है। डह. भोलानाथ तिवारी जी के शब्दों में कहेंगे तो संस्कृति में मनुष्य और उसकी कृतियों के प्रत्येक अंग और स्वरूप का संतुलन है । संस्कृति का तात्पर्य हैं मानव मन के हृदय के तथ्य तथा उसकी वृत्तीयों को संस्कार के द्वारा सुधारना तथा उदात्त बनाना । संस्कृति शब्द से ही पृथ्वी के किसी विशेष क्षेत्र के लोगो की मानसिक क्षमता एवं प्रगति का इतिहास प्रकट होता है । मानवीय समाज के मन, आत्मा, शरीर से संबंधित नैसर्गिक शक्तियाँ, संस्कृति से प्रकट होती हैं । इसी कारण से हम किसी भी मनुष्य समाज के सुव्यवस्थित उदात्त एवं सयंमित आचरण के कारण उसे सुसंस्कृत मानव कहा जाता है ।

संस्कृति एवं साहित्य का गहरा संबंध है । संस्कृति की गरिमा औदात्य, पवित्रता एवं शक्ति साहित्य में ही प्रतिबिंबीत होती है । संस्कृति एवं भाषा का विकास साहित्य के माध्यम से होता है । सामान्यतः युग की आवश्यकता के अनुरूप संस्कृति एवं उसका स्वरुप परिवर्तित होता है । संस्कृति देश की आत्मा होती है । मानव जीवन की प्रगती के लिए संस्कृति और साहित्य दोनों में परस्पर समन्वय आवश्यक है ।

भारतीय संस्कृति का गहन चिंतन करनेवाले बाबु गुलाबराय कहते है - 'भाषा (साहित्य) संस्कृति का बाहरी अंग है । भारतीय संस्कृति की कुछ मौलिक विशेषताएँ है जिसमें संकिर्णता नही उदारता है । स्वार्थ नही समर्पण है ।

साहित्य और संस्कृति का प्राचीन काल से अटूट संबंध रहा है । साहित्य और संस्कृति दोनो एक दूसरे से प्रेरणा पाकर समस्त मानव जीवन के उज्ज्वल भविष्य, कल्याण एवं सुख सुविधा हेतू अविरत प्रयत्नशिल होते है । संस्कृति एवं समाज के माप़दंड साहित्य में प्रकट होते है । समयानुकूल साहित्य अनादि काल से विश्व की अनेक संस्कृतियों, चिंतको धाराओ, विचारों, परंपराओ तथा सिध्दांतो से प्रभाव ग्रहण करता आया है ।

भारतीय समाज की जातीय, धार्मिक, सांस्कृतिक, वेशभूषा, एवं भाषिक विविधता का अध्ययन करते हुए हमारी संस्कृति एवं साहित्य मे भी विविधता के दर्शन होते है । पुरे भारत वर्ष में हमारी अलग अलग भाषाओं का अधिकतर साहित्य संस्कृत भाषा से प्रेरित एवं प्रभावित है । हमारी जातिय, धार्मिक, सांस्कृतिक विविधता को हमारे सिध्दांतो, विचारो को व्यक्त करनेवाली भाषाएँ एवं साहित्य का स्वरूप अलग- अलग हो सकता है । किंतु साहित्य एवं संस्कृति द्वारा व्यक्त होनेवाली मानवीयता का स्तर एक ही है ।

प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति साहित्य एवं समाज का पथ प्रदर्शक कर रही है । प्रत्येक युग का साहित्य अपने युग के तत्वों, आदर्शो एवं मूल्यों के कारण कालजयी होता है । भारतीय साहित्य मे हम देखते

Scanned with OKEN Scanner

है की, संवेदनशिलता, सत्य का आग्रह और मानवीय मूल्यों के प्रती प्रतिबध्दता जैसे मूल्यात्मक विचार भारतीय साहित्य में प्रमुखता से चित्रित है ।

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य प्रारंभ से आजतक अपने विविध रूपों में शिवेतरक्षयते से जुडा हुआ है। यही संस्कृति एवं साहित्य का प्राण तत्व है । सत्यमेव जयते, सर्वे भवन्तु सुखिन संतु, सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्था हमारा, इन सिद्धांतो के बल पर समाज को हमारी संस्कृति प्रेम, करुणा, बंधुत्व, क्षमा, सत्य, दया, शांती जैसे मूल्यात्मक संस्कार की शिक्षा देता है । भारतीय संस्कृति एवं साहित्य भारत के जन गण की तरह विविधता और एकता के परस्पर सुत्रो से बुनी हुई एक सधन इकाई है । भारतीय साहित्य में समाज की विभिन्न विचारधाराओं मान्यताओ, कलाओ, संस्कारों, रीतिरिवाजों का चित्रण है । किंतु इन सभी विविधताओं के बीच एक स्वर सहानुभूति, दृष्टि, विवेक, चिंतन, आस्था प्रेम की भावना का है जो भारतीय संस्कृति की आत्मा है ।

संस्कृति एवं साहित्य का समयानुकूल चित्रण साहित्यकार करता है । उदा. भक्तिकाल के जब कबीर निर्गुण ईश्वरद्वारा ज्ञानमार्गी संत परंपरा का मार्ग दिखा रहे थे । उसी काल में पंजाब नानकदेव, महाराष्ट्र में नामदेव, तेलगु में वेमना जैसे संत तत्कालिन भारतीय समाज की संस्कृति का चित्रण कर रहे थे । गोस्वामी तुलसीदास के संपूर्ण साहित्य में विशेषतः रामचरितमानस, विनयपत्रिका इन रचनाओं में भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं का बहुत आदर्श एवं सुंदर चित्रण हुआ है ।

भारतीय संस्कृति ने स्थित मर्यादा, बडो के प्रती सम्मान की भावना, सत्य एवं धर्म के रास्ते का अनुकरण करना दुराचार, निंदा, लालच, कपट, द्वेष इ. सामाजिक दोषो से दूर रहने का संदेश गोस्वामी जी ने हमे दिया है जो भारतीय संस्कृति की मूल भावना है । विनय पत्रिका द्वारा भी उन्होंने विनयता का जीवन में कितना महत्त्व है उसका सुँदर चित्रण किया है । जायसी ने भी भारतीय संस्कृति का चित्रण पद्मावत काव्य में किया है ।

साहित्य ने समयानुकूल विचारधाराएँ बदलती है । आधुनिक काल में भी हमे प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों ने ग्रामीण जीवन और उसकी संस्कृति की विविधता का परिचय दिया है । उन्होंने गोदान जैसे उपन्यास द्वारा होरी जैसे किसान जीवन का पात्र विपरीत परिस्थिति में भी अपनी सज्जनता नही छोडता जो भारतीय कृषक जीवन की संस्कृति है प्रमुखता दि है। प्रेमचंद के अधिकतर साहित्य में भारतीय संस्कृति के मूल्य हमे दृष्टिगोचर होते है ।

प्रेमचंदोत्तर काल में भी समाज के साथ साहित्य में जो अनेक प्रवाह आ रहे है । उससे साहित्य का स्वरुप, विषय, लेखन कौशल्य में बहुत परिवर्तन आ गया है । हिंदी साहित्य भी इन परिवर्तनों ये दूर नही रह सका । दुर्भाग्य से वर्तमान काल में हमारी गौरवमय संस्कृति एवं साहित्य समाज के कुछ संकुचित मानसिकताओं वाले व्यक्तियों, मनोरंजन के कुछ साधनो इनसे बहुत प्रभावित हो रही है। जिससे हमारी भाषा में कडवाहट, असंवेदनशिलता, अशिष्टता, असभ्यता तथा छिछलापन व्यक्त हो रहा है । हमारी गौरवमय संस्कृति और साहित्य को समय रहते ही हमे इन दृष्ट प्रवृत्तियों से बचाना होगा और भारत देश के उज्जवल भविष्य के लिए आनेवाली पीढी को हमें संस्कृति और साहित्य का महत्त्व बताते हुए उसकी सुरक्षा के लिए प्रतिबध्द रहना पडेगा ।

Scanned with OKEN Scanner